रासलीला

प्रेम का मण्डल

‘भागवतपुराण’ की एक कथा पर आधारित

भाग एक :
श्रीकृष्ण, ग्वालों के राजकुमार

श्रीकृष्ण के युवा होते-होते, गाँव की हर कन्या और हर स्त्री उनसे प्रेम करने लगी थी। वे कहतीं कि कृष्ण बहुत ही मनमोहक हैं, अपने घुँघराले बालों में और अपने तेजोमय श्याम वर्ण में वे बहुत ही खूबसूरत लगते हैं; उनकी आँखें करुणा से भरी हैं; और जब वे कृष्ण के साथ होतीं तब उनमें से हरेक को लगता कि वह खुद भी बहुत सुन्दर और विशेष है। और फिर थी, कान्हा की बाँसुरी। उसके बिना तो कृष्ण कभी रहते ही नहीं थे और सभी मानती थीं कि कृष्ण के जैसी मधुरातिमधुर बंसी और कोई भी नहीं बजाता। जब भी वे कान्हा की बाँसुरी सुनतीं, एक-दूसरे की ओर देखकर मुस्करातीं—फिर वे सब वहाँ जाने के लिए कोई न कोई बहाना ढूँढ़ ही लेतीं और उस सुमधुर ध्वनि की दिशा में खिंची चली जातीं। जब वे वहाँ पहुँचतीं तो पातीं कि कृष्ण की बाँसुरी की ध्वनि की ओर खिंची चली आने वाली वे अकेली ही नहीं हैं। पास ही के झुरमुटों में, हल्की-सी धूप-छाँव में खड़े हिरण भी सुन रहे होते; पेड़ों पर पक्षी बैठे सुन रहे होते; तितलियाँ कृष्ण के बालों पर बैठी होतीं। और अकसर, उनमें से एक गोपी जो वहाँ होतीं, उनका नाम था राधा। ऐसा लगता कि उनमें कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति है और वे श्रीकृष्ण के चरणों में बैठी होतीं।

वर्ष के कुछ विशिष्ट अवसरों पर, यह परम्परा थी कि वृन्दावन के स्त्री-पुरुष वन में एकत्रित होकर नृत्य करते थे। किशोरों के लिए ‘रास’, विवाह-निवेदन की रस्म होती—वह समय जिसमें उन्हें अपने लिए वर या वधु मिलने की आशा होती थी। वे सप्ताहों पहले से इसकी प्रतीक्षा करते। रात को जब कामकाज पूरा हो जाता, तब वे अपनी नृत्य-मुद्राओं और पदों को अभ्यास द्वारा सुधारते हुए दिखते थे। जब गोपियाँ अभ्यास करतीं तो हर एक के हृदय की गहराई में कृष्ण के लिए ही ललक होती और यह आशा होती कि कृष्ण उसके प्रेम का प्रत्युत्तर देंगे।

श्रीकृष्ण यह जानते थे और क्योंकि वे भगवान के अवतार थे, वे यह भी जानते थे कि जो प्रेम गोपियाँ उनके लिए महसूस करती हैं, वह किसी ऐसे स्थान से उमड़ रहा है जो कहीं अधिक गहरा है, यह वह स्थान है जिसमें गहरी ललक है—समस्त वियोग समाप्त होने की तीव्र ललक, भगवान के साथ मिलन की लालसा।

उन्होंने निश्चय किया कि अगली पूर्णिमा की रात्रि को वे गोपियों को उनकी अपनी ललक को समझने में सहायता करेंगे और उन्हें सिखाएँगे कि उसे किस तरह पूर्ण किया जाए।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।